(1)

Dr. Honey Sinha
(Assistant Professor)
Dept. of Commerce

Lecture no: 13

B.Com part - I[st]

Sub :- Auditing (HONS)
Paper - II[nd]

SNSRKS COLLEGE SAHARSA

• Introduction :-

आन्तरिक नियंत्रण के स्वरूप
(FORMS OF INTERNAL CONTROL)

* आन्तरिक नियंत्रण का स्वरूप पूर्णतया प्रबन्ध वर्ग पर निर्भर करता है। प्रबंध व्यवसाय कि आवश्यकता के आधार पर व्यवसाय के संगठनात्मक स्वरूप का निर्धारण करते है। और जिसके आधार पर विभिन्न क्रियाओं का निर्धारण होता है। आन्तरिक नियंत्रण के प्रमुख स्वरूप निम्नलिखित है :-

(1) सामान्य नियंत्रण (General Control) सामान्य नियंत्रण कि क्रिया को दो भागों में बाँटा जा सकता है :-

(a) सामान्य प्रशासनिक नियंत्रण (General Administrative Control) :- इसके अन्तर्गत निम्नलिखित कार्य किये जाते है :

(i) कार्यों का बँटवारा।
(ii) कर्मचारी के कार्यों का निरिक्षण किया जाना।
(iii) समय एवं गति का अध्ययन किया जाना।
(iv) प्रमापों का निर्धारण किया जाना।
(v) वास्तविक निष्पादन की तुलना प्रमाप से किया जाना, इत्यादि

व्यवसाय में क्रय विक्रय की उचित व्यवस्था होनी चाहिए। माल के क्रय करने का अधिकार, माल का आदेश देने का अधिकार, माल कि प्राप्ति, माल का स्कन्ध में शामिल किया जाना तथा माल के निर्गमन आदि की उचित व्यवस्था होनी चाहिए अन्यथा इसमें भी बड़ी मात्रा में गबन की सम्भावना होती है।

(7) पारिश्रमिक पर नियन्त्रण (Control on Remuneration) :-

व्यवसाय में कर्मचारियों के वेतन व मजदूरी के भुगतान की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए। इसमें कमी आने से रोकड़ के गबन की सम्भावना बढ़ जाती है। वेतन एवं मजदूरी के निर्धारण, मजदूरी एवं वेतन के भुगतान, अन्तिम वेतन का भुगतान आदि पर उचित नियंत्रण होना चाहिए तथा इनके भुगतान का भी स्पष्ट आदेश सम्बन्धित अधिकारी से होना चाहिए। इसके अलावा संस्था की निर्धारित नितीयों का पालन भी आवश्यक होता है।

(8) लेनदारों व देनदारों पर नियंत्रण (Control on Debtors and Creditors) :-

व्यवसाय में उधार विक्रय, उधार क्रय, नगद प्राप्त भुगतान, नगद किया गया भुगतान, देनदारों को दी गई छूट तथा लेनदारों कि प्राप्त छूट आदि पर भी नियंत्रण रखा जाना आवश्यक है। अन्यथा यहां

भी गबन कि सम्भावना कम नहीं होती। इसके लिए अलग-अलग विभागों कि स्थापना कि जानी चाहिए। जैसे :- रोकड़ विभाग, क्रय विभाग विक्रय विभाग, प्रशाचार विभाग, उधार बिक्री वसूली विभाग, उधार क्रय विभाग, भुगतान विभाग इत्यादि।

(9) दायित्वों पर नियंत्रण (Control on Liabilities)

व्यवसाय में मुख्य रूप से दो प्रकार के दायित्व होते है।

(i) अल्पकालीन, तथा
(ii) दीर्घकालीन ऋण।

हालांकि अल्पकालीन ऋण पर भी नियन्त्रण रखना आवश्यक होता है अन्यथा गबन कि सम्भावना रहती है, किन्तु दीर्घकालीन ऋण मे गबन कि सम्भावना अधिक रहती है। इसमे ऋण कि मात्रा, ऋण लाभ करने के अधिकार, ऋण लेने से संबंधित संस्था कि नितीयां, जारी किये गये ऋण पत्र, बोण्ड्स सम्पतियो को बन्धक रखने का अधिकार, ऋण लेने कि सीमा आदि पर नियंत्रण रखना आवश्यक है अन्यथा बड़ी मात्रा मे गबन कि सम्भावना रहती है।

(10) खर्च पर नियंत्रण :- (Control on

Expensy) :-

व्यवसाय के खर्च पर नियंत्रण रखना आवश्यक होता है। खर्च करने के लिए उचित आदेश का होना आवश्यक है। पूँजीगत व्यय एवं आयगत व्यय के बँटवारे कि उचित व्यवस्था होनी चाहिए अर्थात अदत्त, पूर्वदत्त, उपार्जित, अनुपार्जित आदि व्ययों पर भी नियंत्रण रखा जाना आवश्यक है, अन्यथा यहाँ भी रोकड़ का गलन आसानी से हो सकता है।

The end

Dr. Honey Sinha
(Assistant Professor)
Dept. of Commerce
SNSRKS College
Saharsa